वर्षम् १९ अङ्कः ३
जनवरी तः मार्च २०२१ पर्यन्तम्

RNI No.
DELSAN/2002/8921

ISSN : 2278-8360

संस्कृत-मञ्जरी

अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्किता त्रैमासिकी शोधपत्रिका

An International Referred Quarterly Research Journal

दिल्ली संस्कृत अकादमी
दिल्ली सर्वकारः

सम्पादकः
डॉ.अरुण कुमार झा
सचिवः

पंजीकरणसंख्या-डी०ई०एल०एस०ए०एन० 2002/8921

आई०एस०एस०एन०-2278-8360

मूल्यम्-२५रूप्यकाणि

संस्कृत-मञ्जरी

SANSKRIT-MANJARI

अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्किता त्रैमासिकी शोधपत्रिका

An International Referred Quarterly Research Journal

वर्षम् १९ अङ्कः ३

(जनवरी तः मार्च २०२१ पर्यन्तम्)

सम्पादकः

डॉ. अरुण कुमार झा

सचिवः

सहायकसम्पादकः

प्रद्युम्नचन्द्रः

प्रकाशकः

दिल्ली संस्कृत अकादमी

(दिल्लीसर्वकारः)

DELHI SANSKRIT ACADEMY

(Govt. of N.C.T. of Delhi)

का-परामर्शका:

. पङ्कज कुमार मिश्रः

डॉ. बलराम शुक्लः

डॉ. पूर्वा भारद्वाजः

डॉ. रणजीत बेहेरा

प्रकाशकः

सचिवः

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी, दिल्ली-सर्वकारः

प्लॉट सं०-५, झण्डेवालानम्, करोलबागोपनगरम्, नवदेहली-११०००५

दूरभाषः - ०११-२३६३५५९२, २३६८१८३५

सदस्यताशुल्कम्

प्रति-अङ्कम्	:	२५ रूप्यकाणि,
वार्षिकम्	:	१०० रूप्यकाणि,
त्रैवार्षिकम्	:	३०० रूप्यकाणि,
पञ्चवार्षिकम्	:	५०० रूप्यकाणि,

ISSN - 2278-8360

©दिल्ली-संस्कृत-अकादमी, दिल्ली-सर्वकारः
©Delhi Sanskrit Academy, Govt. of N.C.T of Delhi

E-mail Id : sanskritpatrika.dsa@ gmail.com
Website : www.sanskritacademy.delhi.gov.in

शुल्कप्रदानप्रकारः

बैंकधनादेशः (डी०डी०), डाकधनादेशः (मनिआर्डर) अथवा सी०टी०सी० चैकमाध्यमेन

(दिल्लीसंस्कृतअकादमीपक्षे)

Mode of Payment:
Demand Draft, Money Order or by CTC Cheque
(In favour of Delhi Sanskrit Academy)

सम्पादकीयम्

अयि! शास्त्राब्धिमन्थनसमुद्भूतपीयूषरसास्वादकुशलाः देववाणीसमुपासकाः सुधीवराः।

संस्कृतसाहित्यं ज्ञानविज्ञानयोः भाण्डागारो वर्तते। तयोः ज्ञानविज्ञानयोः साहित्यिकं सांस्कृतिकञ्च आदान-प्रदानाय पत्रिकायाः स्थानं महत्त्वपूर्णं वर्तते। लेखकपाठकयोर्मध्ये पत्रिका सेतुर्भवति। अतएव भाषायाः साहित्यस्य पत्रिकायाः महती आवश्यकता भवति। शोधकार्ये पत्रिकामाध्यमेन **''वादे वादे जायते तत्त्वबोधः''** इति न्यायेन विदुषां परस्परं विचारविनिमयेन निष्कर्षोऽपि प्राप्तुं शक्यते।

लेखकानां पाठकानाञ्च बलेनैव पत्रिका सञ्चलति। जनोपयोगिलेखान् समर्प्य लेखका एनां शोधपत्रिकां समेधयन्त्विति मे साञ्जलि निवेदनमिति।

शकाब्दः १९४२
फाल्गुन-शुक्ल-पूर्णिमा

भावत्कः
डॉ. अरुण कुमार झा
सचिवः

अनुक्रमणिका

		पृष्ठसंख्या
	तभागः	
	सम्पादकीयम्	III
	ध्रुवपदार्थविमर्शः	१
	-डॉ. सुधाकरमिश्रः	
.	**धनिकस्य काव्यार्थचिन्तनम्**	७
	-डॉ. मीरा द्विवेदी	
३.	**काव्यस्य प्रयोजनम्**	१७
	-श्री एकनारायणपौडेलः	
४.	**पूर्वमीमांसाधीदीपः न्यायविस्तरः**	२०
	-डॉ. विप्लवचक्रवर्ती	
५.	**उपनिषदाधारितजीवनदृष्ट्या विश्वकल्याणम्**	२६
	-डॉ. ओमप्रकाश पारीकः	
	हिन्दीभागः	
६.	**संस्कृत वाङ्मय में प्रतिपादित गङ्गा नदी का वैशिष्ट्य दोआब क्षेत्र प्रयाग के तीर्थ-माहात्म्य के परिप्रेक्ष्य में।**	३०
	-डॉ. रेनू कोछड़ शर्मा	
७.	**हरिहर का नाट्य नैपुण्य**	३८
	-डॉ. कैलाशनाथद्विवेदी	
८.	**भारतीय सभ्यता व संस्कृति में राष्ट्रवाद का महत्त्व**	४४
	-श्री देशदीपक सिंह	
९.	**आधुनिक परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग की प्रासंगिकता**	४९
	-डॉ. ए. के. सिन्हा	
१०.	**संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, आवश्यकता एवं समस्याएँ**	५६
	-डॉ. सञ्जय कुमार	
	अंग्रेजीभागः-	
११.	**Shree Raghunath Temple Jammu:**	७२
	Some insight from Inscription and sanskrit Manuscript	
	- Dr. Kamal Kishor Mishra	
१२.	**Heathy Motherhood Though Ayurveda**	८२
	- Dr. Deepa Mishra	

संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, आवश्यकता एवं समस्याएँ

-डॉ. सञ्जय कुमार

संस्कृत भाषा भारतीयों की प्राणभूत भाषा है। इसका स्वरूप विशाल है। संस्कृत भाषा में ही लोक का मनन, चिंतन, गवेषण और अनुभूति समन्वित है। इसीलिए इसे सम्पूर्ण ज्ञान राशि कह जाता है। अपनी सम्पन्नता तथा विविधता से यह साहित्य विश्ववाङ्मय में अद्वितीय है। इसके सुदीर्घकालावधि में अनेकानेक विधाओं पर अब तक हुए संस्कृत के रचनासंसार का यथोचित आकलन एक कठिन एवं महनीय कार्य है। इसी के अंतर्गत संस्कृत पत्रकारिता का भी विशाल स्वरूप देने को मिलता है। वस्तुत: पत्रकारिता नूतन ज्ञान की पेटिका है। इसके द्वारा अनेक गूढात्मक ज्ञान का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। फलस्वरूप इसे नवनवोन्मेषशालिनी कहा जाता है।

पत्रकारिता हमारे जीवन की विविधताओं, नित्य नूतनताओं और दैनिक घटनावलियों प्रसंगावलियों को शीघ्र प्रस्तुत करने की अतुल क्षमता रखती है।[१] हिन्दी शब्द सागर के अनुसार पत्रकारिता आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि है। पत्रकारिता का सामान्य अर्थ पत्रकार का काम या व्यवसाय है।[२] मानक हिन्दी कोश में पत्रकारिता के संदर्भ में लिा गया है कि वह विद्या जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों, उद्देश्यों आदि का विवेचन होता है।[३] पत्रकारिता के सम्बन्ध में डॉ. मधुधवन का कहना है कि पत्रकारिता का मूलोद्देश्य अन्यायों और बेईमानी का उद्‌घाटन कर, दोषों, कमियों, खामियों को उजागर करना, सलाह मशविरा देना और असहायों की सहायता करना तथा लोगों का मार्गदर्शन करना है।[४] सारांशत: पत्रकारिता शब्द का अभिप्राय ही उस गोपनीयता का प्रकाशन कराना है जिससे सामाजिकता का ह्रास होता है। यह प्रत्येक सरकारी या गैर सरकारी गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। इसी प्रकार अन्य रहस्यात्मक गूढ़ तत्त्वों को जन-सामान्य तक पत्रकारिता के माध्यम से पहुँचाया जा सकता है।

अंग्रेजी में पत्रकारिता को जर्नलिज्म (Journalism) कहा जाता है। जर्नलिज्म शब्द जर्नल से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ दैनिक होता है। प्रतिदिन की गतिविधियों का विवरण जर्नल में रहता है। १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दियों में पीरियॉडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द डियूरनल और जर्नल शब्दों का प्रयोग हुआ। २० वीं शताब्दी में आते-आते जर्नल से जर्नलिज्म का व्यवहार होने लगा। इस प्रकार पत्रकारिता का विविध आयामों में विकास होने लगा। दैनिक के साथ-साथ साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक पत्रों का प्रकाशन होने लगा। समाचार पत्रों के

---

१. जोशी डॉ. सुशीला, हिन्दी पत्रकारिता, विकास और विविध आयाम पृ.-१

२. हिन्दी शब्द सागर, छठा, भाग, पृ. २७,९८

३. मानक हिन्दी कोश, तीसरा खण्ड, पृ.३८०

४. धवन डॉ. मधु, पत्रकारिता एक परिचय, पृ.८

साथ-साथ इसका विकास इतना तीव्र गति से हुआ कि शोधात्मक निबन्धों का संकलन अलग से प्रकाशित होने लगा। धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आई कि प्रत्येक विषय के शोधात्मक निबंधों का प्रकाशन होने लगा। इस प्रकार से अनेक रहस्यात्मक तत्त्वों का प्रकाशन भी पत्रकारिता के क्षेत्र के अंतर्गत ही आता है। इनका वर्गीकरण निम्न रूप में देखा जा सकता है-धर्म-दर्शन, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विज्ञान पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, उद्योग, व्यवसाय पत्रकारिता, फिल्म पत्रकारिता, बाल पत्रकारिता, कृषि पत्रकारिता, ब्रेल पत्रकारिता, संस्कृत पत्रकारिता, हिन्दी पत्रकारिता, अंग्रेजी पत्रकारिता आदि।

यह पत्रकारिता एक नूतन ज्ञान का सर्वोच्च साधन है। संस्कृत साहित्य में पत्रकारिता के रूप में संदेशवाहक की परम्परा बहुत प्राचीन समय से ही प्राप्त होती है। महर्षि नारद को सबसे बड़ा संदेशवाहक माना जाता है। वे सदैव देवताओं को पृथ्वी लोक तथा असुरों के व्यवहारों की सूचना देते थे। रामायण और महाभारत में समाचार दाताओं के भी नाम मिलते हैं। रामायण में सुमुख गुप्तचर भेष में समाचारों को जानकर राम से बताता है। महाभारत का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उस समय समाचार दाता लोग नियत रहते थे, जो कि समाचार एक स्थान से दूसरे स्थान लाया और ले जाया करते थे। संजय ने धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र में होने वाले युद्ध का वर्णन प्रत्यक्ष की तरह किया है। जिस प्रकार आज का पत्रकार समाचार का सीधा प्रसारण करता है। उसी प्रकार संजय धृतराष्ट्र को सीधे प्रसारण के माध्यम से समाचार से अवगत कराते हैं। भाट और दूत लोग भी समाचार दाताओं का काम करते थे। जिनका उल्लेख भास, कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, दण्डी, विशादत्त ने अपने-अपने कृतियों में किया है। 'दण्डी' की रचनाओं से पता चलता है कि तद्युगीन समाज में पत्र लिखने की भी परम्परा चल पड़ी थी। राजकुमारी अवन्तिसुन्दरी अपनी भावना को व्यक्त करने के लिए राजवाहन को पत्र लिकर भेजती है।[५] राजहंस भी राजवाहन सहित सभी कुमारों को बुलाने के लिए राजसेवक को पत्र लिखकर दिया था। यह पत्र अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण विधा की ओर संकेत भी करता है-**''स्वस्ति श्री पुष्पपुराजधान्याः श्रीराजहंसभूपतिपतिश्चम्पा-नगरी- मदिप्रस्थिताः पथि कस्मिंश्चिद्वनोद्देश उपशिवालयं स्कन्धावारमवस्थाप्य स्थिताः। तत्र राजवाहनां शिवपूजार्थ निशि शिवालये स्थितं प्रातरनुपलम्भावशिष्टाः सर्वेऽपि कुमाराः सहैव राजवाहनेन राजहंस प्रणंस्यामो न चेत्प्राणांस्त्यक्ष्यामः इति प्रतिज्ञाय सैन्यं परावर्त्य राजवाहनमन्वेष्टुं पृथक्प्रस्थिता। एवं भवावृत्तान्तं ततः प्रत्यावृत्तानां सैनिकानां मुखाद्कर्ण्या सह्यदुःखोदन्वति मग्नमनसावुभावहं युस्मज्जननीच वामदेवाश्रमं तद्विदितं विधाय प्राणपरित्यागं कुर्वः इति निश्चित्य तदाश्रमसुपगतौ त मुनिं प्रणम्य यावत्स्थितौ तावदेव तेन त्रिकालवेदिनना मुनिना विदितमेवास्मन्मनीषितं निश्चयमववुध्य प्रावाचि-राजन् प्रथममेवैतत्सर्वं युस्मन्मनीषितं विज्ञानबलाद्ज्ञायि। ददेते त्वत्कुमारा राजवाहननिमित्ते क्रियन्तमनेहसमापदमासाद्य भाग्योदयाय साधारणेन विक्रमणे विहितदिग्विजयाः प्रभूतानि राज्यान्यु पलभ्य षोडशाब्दान्ते विजयिनं राजवाहनं पुरस्कृत्य प्रत्येत्य तव वसुमत्याश्च पादानभिवाद्य भददाज्ञाविधायिनो भविष्यति अतस्तन्निमितं किमपि साहसं न विधेयम इति। तदाकर्ण्य तत्प्रत्ययाद्धैर्यमव- लम्ब्याद्यप्रभृत्यंहे देवी च प्राणमधारयाय। इदानीमासन्नवर्तिन्यवधौ वामदेवाश्रमे गत्वा विज्ञाप्तिः पानीयमणि पथि**

५. दशकुमार चरितम्, पूर्वपीठिका पचमोच्छ्वास, चो.अ.मा.प्र. २००४, वाराणसी, पृ.-९८

भूत्वा पेयम् इति।[६] इसी प्रकार अन्य प्राचीन ग्रंथों में पत्र लिने की परम्परा देने को मिलती है। **कृता-स्वमिन त्वदुक्तावधिः पूर्णप्रायो भवति तत्प्रवृत्तिस्त्वदयाद्यापि विज्ञायतेऽति। श्रुत्वा मुनिश्वदतराजन राजवाहनप्रमुखाः सर्वेऽपि कुमार अनेकन्दुर्जयांशत्रून्विजित्य दिग्विजय विधाय भूवलर्य वशीकृत्य चम्पायानेकत्र स्थिता। तवाज्ञापत्रमादाय तदानयनाय प्रेष्यन्तां शिधमेव सेवकाः इति मुनिवचनमाकर्ण्यभवदाकारणायाज्ञापत्रं प्रेषितमस्ति। अतः परं चेत्क्षणमपि यूयं विलम्ब विधायाध ततौ मां वसुमती च मातरं कथावशेषावेव श्रेष्यधेति ज्ञात्वा**

प्रकाशन के समुचित साधनों का अभाव होने पर भी ईसापूर्व तीसरी शताब्दी के मध्य भाग में सम्राट अशोक ने अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों और सीमाओं में चट्टानों, स्तम्भों और गुफाओं पर ऐसे अनेक लेख उत्कीर्ण करवाये हैं, जिन्हें पत्रकारिता का पूर्वरूप कहा जा सकता है। एक ही विषय अनेक स्थलों पर अंकित होने से उनका सन्देश पत्र और प्रमाणित हो जाता है। शिलालेखों का निर्माण भी आज की पत्रकारिता की भाँति जन-सामान्य के लिए ही हुआ है। अशोक के पश्चात् उत्कीर्ण निबंधों की धारा प्रवाहित होती गई। गद्य के स्वाभावितक विकास की रूपरेखा में रुद्रदामन (१५० ई.) का शिलालेख अद्वितीय है। यह एक साहित्यिक और सूचनात्मक कोटि की पत्रिका का रूप था। इन्हीं शिलालेखों में संस्कृत पत्रकारिता का बीज निहित है। संस्कृत पत्रकारिता के ऐसे पूर्व रूप होने पर उसे आधुनिक युग की नवीन प्रवृत्ति कहना उचित नहीं है। आज की पत्रकारिता प्राचीनकाल के उपर्युक्त प्रयासों का सर्वोच्च विकास मात्र है[७]।''

रामगोपाल मिश्र जी का मानना ठीक है लेकिन पत्रकारिता के रूप में इसकी आयु अल्प ही मानी जायेगी क्योंकि उन्नीसवीं सदी के मध्ययुगान्तर से ही संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास आरम्भ होता है और संस्कृत पत्रकारिता स्थिरता को प्राप्त कर लेती है। उस समय से लेकर आज तक भारत के प्रायः सभी भू-भागों से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। संस्कृत पत्रकारिता प्रदेश विशेष की धरोहर नहीं है, वह तो कश्मीर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कटक तक प्रसृत है। इसका आयाम विशाल है और शायद ही ऐसी कोई भारतीय भाषा हो जिसकी पत्रकारिता इतनी व्यापक रूप से विस्तृत हुई हो। इसके असीमित परिधि के भीतर अनेक विदेशी महामनीषियों ने अपनी मातृभाषा का मोह त्यागकर संस्कृत पत्रकारिता को समृद्ध बनाया। इन्होंने महनीय रचनाओं का प्रकाशन किया। इन पत्र-पत्रिकाओं का आद्यन्त अनुशीलन किये बिना आधुनिक संस्कृत साहित्य के विविध एवं वैचित्यपूर्ण गतिविधि का ज्ञान नहीं हो सकता है। संस्कृत की वाग्धारा में जब हम गोता लगाते हैं तो इसके विमलता एवं विदग्धता से रोम-रोम रोमांचित हो जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों ने भी संस्कृत पत्रकारिता पर उल्लेनीय कार्य किये हैं। इसके शैशवावस्था का ज्ञान हमें 'काशीविद्यासुधानिधि' पत्रिका से होता है। इस संस्कृत मासिक पत्रिका का प्रकाशन बनारस में एक जून १८५६ ई. में प्रारम्भ हुआ। प्राप्त सूचनानुसार 'काशीविद्यासुधानिधि' संस्कृत की प्रथम एवं ज्येष्ठ पत्रिका है। इस पत्रिका में मैक्समूलर ने प्रत्नकम्रनन्दिनी तथा विद्योदय के महत्त्वपूर्ण निबंधों का उल्लेख किया गया है। उन्होंने

६. वही, उत्तरपीठिका यामुपसंहार, पृ. ४६५

७.मिश्र रामगोपाल, संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, विवेक प्रकाशन, पृ.-९८

८. वही. पृ. १४-१५

यहाँ दो ऐसी पत्रिकाओं का भी नाम दिया है, जिसमें संस्कृत के ग्रंथ भी प्रकाशित होते थे-'हरिश्चन्द्रचन्द्रिका' और 'तत्त्वोधिनी' बर्नेट ने १९९२[९] में प्रकाशित ब्रिटिश केटलॉग में अनेक संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का यथावत् परिचय दिया है। इसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय प्रकाशनों १८७६ से १९२८ ई. तक के संस्कृत एवं संस्कृत मिश्रित पत्र-पत्रिकाओं की सूचना दी गई है।[१०] भारतीय विद्वानों में विद्यावाचस्पति अप्पाशास्त्रीराशिवडेकर प्रथम विद्वान हैं, जिन्होंने अनेक संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का निर्देश और समीक्षा 'संस्कृतचन्द्रिका' में किया है। इसी पत्रिका का ये सम्पादक भी थे, संस्कृतचन्द्रिका मासिक पत्रिका थी। उसका प्रथम प्रकाशन १८९३ ई. हुआ था। इसका सम्पादन उच्चकोटि का था। सारगर्भित निबन्धों को ही इसमें प्रकाशित किया जाता था। आज तक प्रकाशित संस्कृत पत्रिकाओं में उसका प्रमुख स्थान है।[११] १९०७ ई. मैं 'विण्टर नित्य' ने भारतीय साहित्य के इतिहास का वर्णन किया है। उन्होंने संस्कृतभाषा के जीवित होने में सबाल प्रमाण संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं को ही प्रदान किया है। उनके मतानुसार संस्कृत में अनेक विशिष्ट पत्रिकाओं का सम्पादन हो रहा है। अत: संस्कृत भाषा को विशिष्ट स्थान मिलना चाहिए[१२]। संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों यही धारणा रही है।

भारतीय पत्रकारिता के रूप में 'काशीविद्यासुधानिधि' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसे ही ज्येष्ठ संस्कृत पत्रिका के अंतर्गत रखा जाता है। यहीं से संस्कृत ज्ञान गंगा की अविरल धारा प्रवाहित हुई, जिसमें लाखों लोग गोता लगाकर काव्यानन्द का रसास्वादन करते रहे हैं। काशीविद्यासुधानिधि पत्रिका की प्राचीन प्रतियों में अधिकांश प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का भी प्रकाशन देखने को मिलता है। अर्वाचीन प्रतियों में उस समय के विद्वानों के निबंध भी प्रकाशित किये जाते थे। इसमें व्याकरण, दर्शन, साहित्य के साथ-साथ कुछ पाश्चात्य संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद भी प्रकाशित किये गये हैं। जिनमें वर्कले के प्रिंसिपल ऑफ ह्यूमन नालेज ग्रंथ का अनुवाद ज्ञान-सिद्धान्त चन्द्रिका नाम से तथा लाक के एस्स अन्सर्निड्ग हयूमन अन्डरस्टेन्डिग ग्रंथ मानवीय ज्ञान विषयक शास्त्र नाम से प्रकाशित हुआ[१३]।इस प्रकार अनेक ग्रंथों का प्रकाशन इस पत्रिका के माध्यम से किया गया। अत: उन्नीसवीं शताब्दी में संस्कृत पत्रिका का जन्म माना जाता है।

दूसरी संस्कृत पत्रिका के रूप में प्रत्नकम्रनन्दिनी का नाम आता है जिसका प्रारम्भ १८६७ ई. में हुआ। इसे पूर्णमासिकी नाम से भी जाना जाता है। यह पत्रिका दुर्गाशंकर मुखर्जी आहिया द्वारा बुट्टोला बनारस से प्रकाशित की जाती थी[१४]। इसमें संस्कृत साहित्य, वेद, दर्शन आदि विषयों के सारगर्भित निबंधों का प्रकाशन किया जाता था। लाहौर से सन् १८७१ ई. में विद्योदय संस्कृत मासिक-पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह पत्र लगातार सन् १९१४ तक प्रकाशित होता रहा। सन् १८८७ से इस पत्रिका का प्रकाशन कलकत्ता से होने लगा[१५]। यह पत्रिका अपने समय

---

९. काशी विद्या सुधानिधि, पृ. ७१

१०. मिश्र रामगोपाल, संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, पृ.२

११. वही, पृ.-३

१२. विन्टर नित्स, भारतीय साहित्य का इतिहास, भाग-१, पृ.-३८-३९

१३. मिश्र रामगोपाल, संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, पृ.-२३, २४

१४. वही, पृ.-२४

१५. वही, पृ.-२५

में विद्वतापूर्ण निबंधों से तत्कालीन पाठकों पर गहरी छाप छोड़ी थी। इसमें कादम्बरी नाटक, हामलेटचरितम्, कोकिलदूतम्, राममयविद्याभूषण का कलाविलास प्रहसन शिव पुराण आदि का प्रकाशन हुआ। अरसिकेषु कविस्व निवेदनं मालिख का उद्देश्य सन् १८७८ ई. में विद्यार्थी नामक पत्र के प्रकाशन से आरम्भ हुआ। सन् १८८० ई. तक यह पत्र मासिक रूप में घटना से प्रकाशित किया जाता था। इसके बाद इसका प्रकाशन पाक्षिक रूप में उदयपुर से प्रारम्भ हुआ। यह संस्कृत भाषा का पहला पाक्षिक पत्र था।[१६] इसमें भी तत्युगीन अर्वाचीन कविसृष्टि को स्थान दिया जाता था। कलकत्ता से सन् १८७८ ई. में 'आर्षविद्यासुधानिधि' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ, यह मासिक पत्रिका थी। इसमें भी नवीन रचना को प्रकाशित कर लेक और कवियों को प्रोत्साहित किया जाता था। इसी प्रकार लाहौर से सन् 1882 में 'आर्य' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ, जिसके सम्पादक सम्भवतः आर.सी. बैरी को माना जाता है। इसमें दर्शन, कला, साहित्य, विज्ञान, धर्म और पाश्चात्य-दर्शन से सम्बन्धित विषयों का प्रकाशन होता था। 1886 ई. में साहित्य, संस्कृति की पत्रिका 'ब्रह्मविद्या' का प्रकाशन चिदम्बरम् से प्रारम्भ हुआ। प्राप्त सूचनानुसार इस पत्रिका का प्रकाशन अर्थाभाव के कारण सन् १९०२ ई. तक ही हो सका। 'विज्ञान चिन्तामणि' पत्रिका का सन् १८८८ ई. में मालाबार से प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक पुन्नेशेरि नीलकण्ठ शर्मा थे। इसको और विद्योदय पत्रिका को ही उस समय विद्वत् प्रतिष्ठा प्राप्त थी। कलकत्ता से १८८९ ई. में वैदिक साहित्य से सम्बन्धित 'उषा' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह एक उच्चकोटि की मासिक पत्रिका थी। इसके सम्पादक सत्यव्रत सामश्रमि भट्टाचार्य जी थे। बंगाल प्रान्त में वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए ही इसका सम्पादन प्रारम्भ किया गया[१८]।

उन्नीसवीं शती की अपूर्व युगान्तकारी और सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका 'संस्कृतचन्द्रिका' का प्रकाशन १८९३ ई. में आहिरी टोला बाबूराम घोषलेन-९ भवन कलकत्ता से हुआ। संस्कृत भाषा के संवर्धन एवं ज्ञान पीपासा की तृप्ति में इस पत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है। 'संस्कृतचन्द्रिका' पत्रिका की कतिपय अपनी प्रमुख विशेषताएँ थीं। इसके प्रथम भाग में गद्य, पद्य और गीत आदि काव्य ग्रंथों का प्रकाशन होता था। द्वितीय भाग में समालोचना और तृतीय भाग में धार्मिक निबंधों का आकलन किया जाता था। चतुर्थ भाग में चित्रात्मक कविताएँ तथा अन्य सूचनाएँ एवं पंचम भाग में वार्ता संग्रह प्रकाशित रहता था। इस प्रकार यह पत्रिका विविध विषयों की अध्ययन पेटिका थी। जो साहित्य, कला, संस्कृत, दर्शन एवं सूचना पर केन्द्रित हुआ करती थी।

श्रीरंगम् से सन् १८९५ में 'सहृदय' नामक संस्कृत मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसमें रमणीय चित्रों का भी प्रकाशन किया जाता था। परन्तु इसका विशेष उद्देश्य गीर्वाणभारती का प्रचार-प्रसार करना ही था। इसमें सरस कविता, गद्य, निबंध आदि का प्रकाशन हुआ करता था। अनुवाद आदि भी इसमें प्रकाशित किये जाते थे। सहृदय ही एक मात्र ऐसी पत्रिका थी जिसमें विज्ञान विषय के निबंध भी प्रकाशित किये जाते थे। संस्कृत भाषा के विरल प्रचार को देकर संस्कृत ममता को अक्षुण्ण रखने के लिए कविता लेखकों के प्रोत्साहन के लिए अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता था, जिसमें श्रेष्ठ पत्रिकाओं की सूची निम्न है-

१६. वही, पृ.-२९

१७. इण्डिया केटेलॉग ऑफ पेवीओडायल्स, न्यूजपेपर्स एण्ड गजेटियर्स, पृ. ३६

१८. उषा, १/१

समस्यापूर्तिः	१९००	कोल्हापुर	अप्पाशास्त्री
संस्कृतपत्रिका	१८९६	कुम्भकोणम्	वी.वी. कामेश्वर अय्यर
काव्यकादम्बिनी	१८९६	ग्वालियर	नानूलाल
कथाकल्पद्रुम	१८९९	कोल्हापुर	अप्पाशास्त्री
मंजुभाषिणी	१९००	कांचीवरम्	पी.वी, अनन्ताचार्य
विद्वत्कला	१९००	लश्कर	.....
पण्डित पत्रिका	१८९८	वाराणसी	बालकृष्ण शास्त्री
पीयूषवर्षिणी	१८९०	फरुखाबाद	गौरीशंकर वैद्य
विद्यामार्तण्ड	१८८८	प्रयाग	ज्वाला शर्मा
काव्याम्बुधिः	१८९३	वैगुलनगर	पद्मराजपण्डित
आयुर्वेदोद्धारकः	१८८७	मथुरा	मथुराहरारामचौबे
संस्कृतकामधेनुः	१८७९	वाराणसी	ढुण्ढिराजशास्त्री
धर्मप्रकाश	१८६७	आगरा	ज्वालप्रसाद

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक आते-आते संस्कृत पत्रकारिता का विकास पूर्ण रूप से दिखाई देने लगा था, फलस्वरूप वीसवीं शताब्दी में चारों ओर संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का परचम लहराने लगा था। कविता, कहानी, चुटकुले एवं निबंधों के रूप में संस्कृत पत्रकारिता का लेखन कार्य प्रारम्भ हो गया। दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक मासिक द्वैमासिक, त्रैमासिक, षण्मासिक और वार्षिक आदि विविध प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन विभिन्न संस्थानों एवं अनेक स्थानों से आरम्भ हुआ। निबंधों के रूप में संस्कृत पत्रकारिता को बीसवीं शताब्दी में उल्लेनीय सफलता मिली। साहित्य, दर्शन, वेद, व्याकरण आदि विषयों का अलग-अलग प्रकाशन कर अखिल संस्कृत जगत् का उद्घाटन हुआ। इस प्रकार अनेक रहस्यात्मक तत्त्वों का प्रकाशन संस्कृत पत्रिकारिता के द्वारा हुआ।

कालखण्ड पर आधारित दैनिक साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक आदि के प्रकाशन से संस्कृत पत्रिकारिता को विशेष सफलता मिली क्योंकि इससे संस्कृत को जन-जन तक पहुँचने में सुविधा मिली। दैनिक पत्रों का प्रधान लक्ष्य प्रायः सभी प्रकार के नवीनतम समाचारों तथा तत्सम्बन्धी अन्य तथ्यों को प्रकाशित करना होता है। सम्पादकीय निबंधों से तत्कालीन राजनीति, धर्म और साहित्य तथा संस्कृति पर विचार किया जाता है। समाचार पत्रों में स्थायी साहित्य का प्रकाशन स्थानाभाव के कारण अधिक नहीं हो पाता है तथापि उनका महत्त्व अधिक रहता है। दैनिक पत्रों में तत्कालीन महत्त्व की घटनाओं का वर्णन रहता है। अतः पत्रकारिता के विकास में दैनिक संस्कृत पत्रों का विशेष महत्व है। दैनिक समाचार पत्रों से ही पत्रकारिता की लोकप्रियता बढ़ी है। मासिक

१९. मिश्र रामगोपाल, संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, पृ.५६

२०. श्रीः ८१-२१

पत्रिकाओं में तत्कालीन समाचारों का उल्लेख गौण रहता है तथा उसमें स्थायी साहित्य का प्रकाशन प्रधान रहता है। त्रैमासिक और द्वैमासिक पत्रिकाओं में साहित्य एवं संस्कृति का ही प्राधान्य रहता है। परन्तु षाण्मासिक एवं वार्षिक पत्रिकाओं में साहित्य, धर्म, दर्शन के गूढात्मक तत्त्वों का ही विशेष रूप में प्रकाशन किया जाता है।

संस्कृतभाषा का पहला दैनिक समाचार पत्र 'जयन्ती' १ जनवरी १९०७ ई. में त्रिवेन्द्रम केरल से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक कोमल मारुताचार्य और लक्ष्मीनन्दन स्वामी थे। संस्कृत में दैनिक पत्र का प्रकाशन यद्यपि अपने आप में एक अपूर्व घटना थी, तथापि उसके लिए पर्याप्त पाठक पाना बहुत ही कठिन है। अतः जहाँ एक ओर सम्पादकों का अमित उत्साह परिलक्षित होता है वहीं संस्कृतज्ञों का संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के प्रति उपेक्षा का भाव भी स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है। यही कारण है कि अधिकांश संस्कृत पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशन के बाद एक वर्ष की अल्पावधि के भीतर ही बन्द हो गईं। जयन्ती की जय यात्रा प्रारम्भ के साथ ही समाप्त हो गई। दैनिक संस्कृत पत्रिका संस्कृति का प्रकाशन १९ नवम्बर सन् १९०१ को पूज्यपत्तन (पूना) से प्रारम्भ हुआ। आरम्भिक पंद्रह दिनों तक यह पत्र 'विजय' नाम से ही प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् इसी पत्र का नाम बदलकर 'संस्कृति' कर दिया गया।[२१] तभी से यह पत्रिका 'संस्कृति' नाम से ही प्रकाशित होने लगी। इसके सम्पादक बालाचार्य वरेडकर जी थे। संस्कृत भाषा का तीसरा दैनिक पत्र सुधर्मा जुलाई १९७० ई. को प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक वरदराज अयंगार जी थे। मैसूर का यह चर्चित दैनिक पत्र था। इसका चौबीस पैसा मूल्य था। यह रविवार को प्रकाशित नहीं होता था। कारण था कि अंग्रेजी शासनकाल में रविवार को सभी कार्यालय एवं शिक्षण संस्थान बन्द रहा करते थे। सुधर्मा सरल संस्कृत भाषा में प्रकाशित होती थी। जिसमें देश-विदेश के समाचारों का प्रकाशन किया जाता था। इसमें सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा वैज्ञानिक निबंधों का भी प्रकाशन होता है। बाण साहित्य के निबंध भी इस पत्र में प्रकाशित किये जाते थे। सन् १९०६ में कोल्हापुर से सूनृतवादिनी पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक विद्यावाचस्पति अप्पाशास्त्री राशिवडेकर थे। यह पत्रिका प्रति शनिवार को संस्कृत चन्द्रिका कार्यालय कोल्हापुर से प्रकाशित की जाती थी। यह सन् १९०९ तक नियमित रूप से प्रकाशित हुई। संस्कृतसाकेत' पत्रिका का प्रकाशन सन् १९०९ में अलिख भारतीय विद्वत समिति अयोध्या द्वारा प्रारम्भ किया गया। इसके सम्पादक हनुमत प्रसाद त्रिपाठी थे। इन्हीं के सम्पादकत्व में इसका दस साल तक प्रकाशन हुआ। इनके अनन्तर १९३१ ई. से १९४० ई. तक यह पत्र पं. रूपनारायण मिश्र के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। सन् १९४० से सन् १९५८ तक ब्रह्मदेव शास्त्री इस पत्र के सम्पादक थे।

संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सन् १९३० में 'संस्कृतम्' पत्र का प्रकाशन संस्कृत कार्यालय अयोध्या से हुआ। इस संस्कृत पत्र के सम्पादक पण्डित कालीकुमार त्रिपाठी थे। इन्हीं के सम्पादकत्व में यह पत्र बहुत दिन तक प्रकाशित होता रहा। इसका प्रकाशन प्रति मंगलवार को किया जाता था। सन् १९३४ के लगभग देववाणीश पत्रिका प्रकाशन, कलकत्ता से प्रारम्भ हुआ। इसी प्रकार अनेक साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन बीसवीं शताब्दी में किया जाता था। उनमें मुख्य का नाम निम्नवत् हैं-

---

२१. संस्कृत चन्द्रिका ९/१०

२२. मिश्र रामगोपाल, संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, पृ.-१११

सूनृतवादिनी	१९३४	वाराणसी	----------
मंजूषा	१९३६	कलकत्ता	डॉ. क्षितीशचंद्र चटर्जी
सुरभारती	१९४३	भूलेश्वरपु-मुम्बई	श्रीगोविंदवल्लभ शास्त्री
भक्तिव्यम्	१९५१	नागपुर	श्रीधरभास्कर वर्णेकर
वैजयन्ती	१९५६	वागलकोट	पण्टरीनाथाचार्य
पण्डित-पत्रिका	१९५३	दुर्गाकुण्ड वाराणसी	पं. महादेव शास्त्री
भाषा	१९५५	गुन्टूर	गो.स. काशी कृष्णचार्य
गाण्डीवम्	१९६४	वाराणसी	रामबालक शास्त्री

गाण्डीवम् संस्कृत पत्र आज तक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रकाशित हो रहा है। इसके संस्थापक सम्पादक श्री रामबालक शास्त्री जी थे। यह संस्कृत साप्ताहिक पत्रिकाओं में विशिष्ट स्थान रखती है। इसमें अनेक संस्कृत सम्बन्धी सूचनाएँ दी जाती हैं।

बीसवीं शताब्दी को संस्कृत पत्रकारिता का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इस काल में संस्कृत ग्रंथों के प्रति लोगों को विशेष अनुराग दृष्टिगत होता है। उन्नीसवीं शती में अनेक पाक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। उसी नींव पर बीसवीं शताब्दी में भी अनेक पाक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ था। विद्वन्मनोरंजिनी पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन अक्टूबर १९०७ ई. कांची से आरम्भ हुआ। कांची महान्कवि दण्डी की जन्मभूमि एवं संस्कृत विद्या केन्द्र स्थली रही है। इस पत्रिका का प्रकाशन वैजयन्ती पाठशाला के प्राचार्य के सम्पादकत्व में होती थी। ट्रिप्लीकेन मद्रास से १९०७ ई. में 'मनोरंजिनी' संस्कृत पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। सन् १९१० 'अमरभारती' का संस्कृत पाक्षिक पत्रिका त्रिवेन्दरम् केरल से प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक कुट्टचेटि आर्य शर्मा जी थे। सन् १९१८ में 'मित्रम्' का प्रकाशन पटना से प्रारम्भ हुआ। संस्कृत की प्रसिद्ध पाक्षिक पत्रिका सन् १९२६ में वाराणसी के शारदाभवन से 'सहस्रांशु' नाम से प्रकाशित हुई। इसके सम्पादक गौरीनाथ पाठक थे। इस पत्र की भाषा सरल एवं सहज जन सामान्य के लिए बोधगम्य थी। 'वाङ्मय' संस्कृत पत्र का प्रकाशन १९४० के लगभग वाराणसी से प्रारम्भ हुआ। इस पत्र की सूचना 'श्री' पत्रिका से प्राप्त होती है। १९४० ई. से वाराणसी से उच्छृंलम् पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस पत्र की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उसे अमावस्या और पूर्णिमा के दिन ही प्रकाशित किया जाता था। जिससे भारतीय संस्कृति का वर्णन स्वत: हो जाता था। इसका प्रकाशन और प्राप्ति स्थल उच्छृल कार्यालय वाराणसी सिटी था। इसके सम्पादक सम्भवत: श्री सिद्धलिंगस्तैलंग जी थे। इनका मूल नाम माधव प्रसाद मिश्र था। सन् १९५८ में 'भारतवाणी' पत्रिका का प्रकाशन पूना से डॉ. ग.वा. पलसुले के सम्पादकत्व में प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका का वार्षिक मूल्य मात्र पाँच रुपया था। इसमें समाचारों के साथ-साथ कविताएँ, कहानियाँ, निबंध तथा अनूदित साहित्य भी विशेष रूप से प्रकाशित किये जाते थे। 'संस्कृतवाणी' पत्र का प्रकाशन १९५८ ई. से प्रारम्भ हुआ। इसका प्रकाशन स्थल राजमुद्री था तथा इसके सम्पादिका श्रीमती एन.सी. जगन्नाथन थी। इस पत्र की सम्पादिका स्त्री होने से तत्कालीन स्त्री संस्कृत चेतना का परिचय भी मिलता है। सन् १९५९ में पूना से 'शारदा' पत्रिका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक वसन्त अनन्त गाडगिल जी थे तथा

प्रकाशन स्थल ४२५ सदाशित पेठ पुणे था। इसमें बालसाहित्य की सामग्री का विशेष रूप से प्रकाशन किया जाता था। जिससे बालक को प्रारम्भिक जीवन से ही संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न हो जाय। इसमें आकाशवाणी समाचार, नाटकों के चित्र, उत्सवों का विवरण, जीवन-चरित्र, संस्कृत विश्ववार्ता एवं समालोचना का भी प्रकाशन होता था। पाक्षिक पत्र-पत्रिकाओं ने 'शारदा' का महत्त्वपूर्ण स्थान था। संस्कृत जगत् में इसके अतुलनीय सेवा को भुलाया नहीं जा सकता है।

बीसवीं शती में प्रकाशित होने वाली मासिक संस्कृत पत्रिकाओं की अत्यधिक संख्या थी। अनेक ऐसे पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था, जिनकी सूचना अन्य पत्र-पत्रिकाओं में मिलती है। बीसवीं शताब्दी के मासिक पत्रिकाओं में नाटक, कहानी, चुटकुले, निबंध आदि के साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक निबंधों का प्रकाशन होता था। इन पत्रिकाओं में विश्वबन्धुत्व एवं राष्ट्रीय एकता और तदनुकूल भावोन्मेष मिलता है। अतः इनका वर्णन करना प्रसंगानुकूल रहेगा। 'ग्रन्थप्रदर्शिनी' संस्कृत मासिक पत्रिका का प्रकाशन सन् १९०१ में विशााापट्टनम से प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक पण्डित एस. दी ह्वी ग्नाथ स्वामी थे। इसका प्रकाशन १९०३ ई. तक निर्बन्ध होता रहा। मासिक पत्रिका के रूप में १९०१ का वर्ष बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इस साल धर्मचन्द्रिका, सुदर्शन धर्मपताका, भारतधर्म, पुराणादर्श, अभिमास, निर्णय और प्रकटनपत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। भारत धर्म का प्रकाशन चिदम्बरम् से, प्रकटनपत्रिका का प्रकाशन त्रिचनापल्ली से प्रारम्भ हुआ। ये सभी पत्रिकाएँ धार्मिक भावना के उदय के लिए प्रकाशित की जाती थी। तत्कालीन समय में अंग्रेजी शासन अपने अंग्रेजीयत से भारतीय धर्म एवं संस्कृति को छिन्न-भिन्न कर रही थी। अतः भारतीयों को अपनी भाषा एवं संस्कृति की ओर उन्मु करने के लिए संस्कृत पत्रिकाओं का उदय हुआ क्योंकि संस्कृत ही संस्कृति की सम्बाहिका होती है। नादु काबेरी (तंजोर) से सन् १९०२ में 'ब्रह्मविद्या' का प्रकाशन हुआ। इसके सम्पादक परम ब्रह्मश्री विद्वान् श्रीनिवास दीक्षित जी थे। सन् १९०२ में 'विद्याविनोद' पत्र के प्रकाशन की सूचना संस्कृत चन्द्रिका पत्रिका से मिलती है। यह पत्र भरतपुर से प्रकाशित किया जाता था। वाराणसी से 'सुक्तिसूधा' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशन १९०३ ई. में प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक भवानीप्रसाद शर्मा जी थे। यह पत्र में प्रत्येक मास के पूर्णिमा के दिन प्रकाशित किया जाता था। जयपुर-राजस्थान से संस्कृत साहित्य सम्मेलन से 'संस्कृतरत्नाकर' पत्र का प्रकाशन सन् १९०४ में प्रारम्भ हुआ। इस पत्र में जयपुर के विद्वान् अनेक सुन्दर-सुन्दर निबंधों को लिकर प्रकाशन के लिए भेजते थे। यह पत्रिका भट्टमथुरानाथ शास्त्री के सम्पादकत्व में बहुत दिन तक प्रकाशित होती रही।

इसी प्रकार अनेक मासिक संस्कृत पत्रों का प्रकाशन हुआ जो संस्कृत जगत् को उन्नत बनाने में सहायक हुए वे निम्न हैं-

मित्रगोष्ठी	१९०४	वाराणसी	महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा
विद्वद्गोष्ठी	१९०४	वाराणसी	.....
विचक्षणा	१९०५	पेरुटुम्बुर	.....
विशिष्टाद्वैतिनि	१९०५	श्रीरंगम्	ए. गोविन्दाचार्य
सद्धर्म	१९०६	मुथरा	श्री वामनाचार्य

सहृदया	१९०६	त्रिचनापल्ली	.....
षड्दर्शिनी	.....	श्रीरंगम्	वासुदेव दीक्षित
आर्यप्रभा	१९०९	कलकत्ता	श्री कुंजबिहारी
साहित्यसरोवर	१९१०	.....	.....
पुरुषार्थ	१९१०	धारवाड़	चिन्तामणि
उषा	१९१३	हरिद्वार	पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार
शारदा	१९१३	दारागंज प्रयाग	चन्द्रशेर शास्त्री
व्याकरण ग्रंथावली	१९१४	मद्रास	चक्रवर्ती रायपेटटै, कृष्णआचार्य
श्री शिवकर्माणिदीपिका	१९१५	कुम्भकोणम्	चन्द्रशेखर शास्त्री
संस्कृत महामण्डलम्	१९१९	कलकत्ता	श्री लक्ष्मणशास्त्री
सुप्रभातम्	१९२३	वाराणसी	श्री देवीप्रसाद शुक्ल
सरस्वती	१९२३	मद्रास	राजावासिरेड्डी
सूर्योदय	१९२६	वाराणसी	बिन्देश्वरी प्रसाद शास्त्री
सूरभारती	१९२६	मीरघाट, वाराणसी	.....
उद्यान पत्रिका	१९२६	तिरुपति	डी.टी. ताताचार्य
उद्यौत	१९२८	लाहौर	नृसिंह देवशास्त्री
अमर भारती	१९३४	बनारस	नारायण शास्त्री खिस्ते
मंजुषा	१९३५	कलकत्ता	क्षितीश शास्त्री चट्टोपाध्याय
वल्लरी	१९३५	वाराणसी	केशवदत्त पाण्डेय
ज्योतिष्मति	१९३६	वाराणसी	बलदेव प्रसाद मिश्र
भारतश्री	१९४०	अस्सी, काशी	.....
मनोरमा	१९४९	बेहरामपुर, बम्बई	रामस्वरूप शास्त्री
संस्कृत प्रतिमा	१९५१	वाराणसी	रामगोविंद शुक्ल
दिव्य ज्योति	१९५५	शिमला	दिवाकर दत्त शर्मा
विद्या	१९५६	बेलगांव	बरेड़ी नरसिंह
जयतु संस्कृतम्	१९६०	काठमाण्डु	श्रीप्रसाद गौतम
साहित्य वाटिका	१९६०	दिल्ली	यशोदानन्द भारद्वाज

द्वैमासिक संस्कृत पत्रिकाओं का भी बीसवीं शताब्दी में प्रकाशन होता था। श्री काशी-पत्रिका प्रथम द्वैमासिक संस्कृत पत्रिका थी। इसका प्रकाशन १९०१ ई. वाराणसी से हुआ। सन् १९३२ में पूना से 'भारतसुधा' नामक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ था। यह पत्रिका भारतसुधा पाठशाला के अधिकारियों द्वारा प्रकाशित की

परांजपे, प्रो. शंकर वामन दांडेकर, श्री शैलाद्रि गोविंद कानडे और पुरुषोत्तम गणेश शास्त्री आदि विद्वान के सम्पादन मण्डल में सुचारु रूप से प्रकाशित हो रही थी। इस प्रकार द्वैमासिक दो ही संस्कृत पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। जो बहुश्रुत एवं धार्मिक पत्र थे। इसमें साहित्य संस्कृति का सहभाव दिखलायी पड़ता है। संस्कृत पत्रकारिता के रूप में त्रैमासिक संस्कृत पत्रिका का भी प्रकाशन ठीक प्रकार से किया जाता था। सन् १९४२ में वाराणसेव संस्कृत महाविद्यालय से 'सरस्वती सुषमा' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसमें कविता, कहानी एवं निबंधों का संकलन रहा करता था। निबंध सदैव गूढ़तत्त्वों का प्रकाशन करने वाले होते थे। इसके सम्पादक डॉ. मंगलदेव शास्त्री जी थे। जो संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान थे। विद्यालयपत्रिका संस्कृत जगत की प्रसिद्ध पत्रिका थी। इसका प्रकाशन १९३२ ई. में माथुर चतुर्वेद संस्कृत विद्यालय, मथुरा से प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका के सम्पादक का पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी जी थे। आचार्य द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री के सम्पादकत्व १९६० ई. में 'संस्कृतप्रभा' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इसका प्रकाशन मेरठ से होता था। इसमें संस्कृत विषय से सम्बन्धित अनेक कविता, कहानी, निबंधों का प्रकाशन होता था। सन् १९६० में संस्कृत भाषा प्रचारिणी सभा चितुर से 'गैर्वाणी' पत्रिका का प्रकाशन किया गया। इसके सम्पादक वरदराजन् पन्तुल जी थे। यह सचित्र पत्रिका थी। इसमें सभा का विवरण, सुभाषित, आन्ध्रप्रदेश संस्कृत परीक्षा की सूचना आदि का भी प्रकाशन किया जाता था। सन् १९६२ में सागर (म.प्र.) से सागरिका नामकएक उच्चकोटि की पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जिसके संस्थापक सम्पादक प्रो. रामजी उपाध्याय, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर थे। यह पत्रिका प्रारम्भ में मासिकी थी। परन्तु दूसरे वर्ष से त्रैमासिक हो गई। तभी से यह पत्रिका अबाध गति से प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका नितनूतनता, गम्भीरता से परिपूर्ण शोध निबंधों का प्रकाशन करती है। संस्कृत मनीषियों के जीवनी, गीत और रूपकों का प्रकाशन यदा-कदा 'सागरिका' में प्रकाशित होता रहता है। आज भी यह पत्रिका उसी अपनी नूतनता को ओढ़ी हुई है जो प्रारम्भिक अवस्था में थी। इसके गाम्भीर्य विषय का प्रवर्तन आज भी सहृदयों द्वारा किया जाता है। १९८३ में एक और पत्रिका श्नाट्यम्श का प्रकाशन संस्कृत विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर से ही प्रारम्भ हुआ। जिसके संस्थापक संपादक प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी हैं। यह पत्रिका रंगमंच सौन्दर्यशास्त्र की अपने आप में एक विशिष्ट पत्रिका है। जिसमें मात्र हिन्दी भाषा में नाट्य विधा एवं नाटक महिमा के विविध पक्षों का उद्घाटन किया जाता है। आज भी इस पत्रिका का संपादन प्रो. त्रिपाठी जी ही कर रहे हैं। तिरूव्याय (मद्रास) से किसी समय संस्कृत त्रैमासिक 'भारतीय' पत्रिका का प्रकाशन हुआ था। परन्तु इस पत्रिका की प्रतियाँ अनुपलब्ध हैं। इसी प्रकार तत्कालीन समय में विश्वसंस्कृतम् होशियारपुर से, 'संवित' बम्बई से, 'संगमनी' प्रयाग से, 'गुंजारव:' अहमदनगर से, 'पाटलश्री:' पटन से, 'मधुमती' उदपपुर से प्रकाशित होती थी। वे सभी पत्रिकाएँ अपने गूढ़ ज्ञान से साहित्य संस्कृत प्रेमियों का रंजन किया करती थी। त्रैमासिकी संस्कृत पत्रिका की ही भाँति चतुर्मासिक पत्रिकायें भी भारत के लगभग सभी प्रान्तों से प्रकाशित की जाती थी। सन् १९३० में श्रीचित्रा नामक पत्रिका का प्रकाशन श्री महामोहपाध्याय एस. नीलकण्ठ शास्त्री के सम्पादकत्व में 'त्रावणकोर' विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्यालय से हुआ। इस पत्रिका के सम्पादक श्री एन.गोपाल पिल्लई जी थे। वह अपने समय की उच्चकोटि की पत्रिका थी।

इसके प्रत्येक अंक में लगभग छत्तीस पृष्ठों में विविध वाङ्मय प्रकाशित होता रहा। सात वर्ष तक इस पत्रिका का प्रकाशन होता रहा। एक केरलग्रंथमाली भी पत्रिका थी जो चतुर्मासिक पत्रिका थी। मित्रगोष्ठी के अनुसार १९०६ ई. में इसका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था[२३]।

संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की बढ़ती बहुआयामी व्यापकता के रूप में अप्रैल १८५९ ई. ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से संस्कृत प्रतिभा पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके सम्पादक डॉ. राघवन जी थे। इस पत्रिका का प्रत्येक अंक लगभग सौ पृष्ठ का हुआ करता था। यह विशुद्ध संस्कृत की पत्रिका थी। इसके प्रथम भाग में सम्पादकीय रहता है। इसी भाग में अर्वाचीन ण्डकाव्य प्रकाशित किये जाते हैं। तीसरे भाग में गद्य-प्रबंध तथा चतुर्थ भाग में रूपकों का प्रकाशन होता है। पाँचवें भाग में अनुवाद प्रकाशित किये जाते हैं। पत्रिका में संस्कृत भाषा में रचित अनेक अर्वाचीन ग्रंथों का प्रकाशन भी होता रहा है। सन् १९६७ से आरा-बिहार से मागधन पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह पत्र नेमिचन्द्र शास्त्री के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई।। इसमें अर्वाचीन कवियों की कृतियों का प्रकाशन हुआ। महाकवि कालिदास से सम्बन्धित इससे एक विशेषांक भी प्रकाशित हुआ था जो बहुत ही गौरवपूर्ण था। दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, चतुर्मासिक और षण्मासिक पत्रिकाओं के प्रकाशन में अनन्तर वार्षिक पत्रिकाओं का क्रम आता है। वार्षिक पत्रिकाओं में विशेषकर शोधात्मक एवं गूढात्मक निबंधों का प्रकाशन किया जाता है। नवीन अनुसंधान से मानव व्यक्तित्व का अपारबौद्धिक उन्नति होती है। नवीन तथ्यों की जानकारी से अज्ञात के प्रति केवल उसकी जिज्ञासा तथा ज्ञान-पिपास ही शान्त व संतुष्ट नहीं होती बल्कि उसकी चिन्तन शक्ति, कल्पना शक्ति, विश्लेषण शक्ति तथा सर्जनात्मक शक्ति का भी अत्यधिक विकास होता है। इस प्रकार वार्षिक अनुसंधान संस्कृत पत्रिका ने मानव व्यक्तित्व को बौद्धिक रूप से विकसित करने में एक अति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

सन् १९४१ में बंगलौर से अमृतवाणी नामक संस्कृत शोध पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके सम्पादक विद्याभास्कर विद्वान एस.रामकृष्ण थे। यह पत्रिका सेंट जोसेफ कॉलेज की संस्कृत सभा से प्रकाशित आरम्भ इसकी जीवन आयु लगभग तेरह साल की थी। इस पत्रिका का उत्तर भारत में विशेष प्रचार नहीं हो सका था, परन्तु दक्षिण भारत में यह विद्वानों द्वारा अत्याधिक सम्मानित थी। इसमें उच्चकोटि के निबंधों का प्रकाशन होता था। वार्षिक पत्रिकाओं में निबंधों की कमी नहीं होती थी। फलस्वरूप श्रेष्ठ निबंधों का चुनाव करके ही प्रकाशन किया जाता था। सन् १९५८ में उस्मानिया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. आर्येन्द्र शर्मा ने 'तरंगिनी' नामक संस्कृत शोध पत्रिका का सम्पादन किया। इसमें उत्कृष्ट निबंधो के साथ-साथ श्रेष्ठ कविताओं को भी प्रकाशित किया जाता था। डॉ. वी. राघवन् के सम्पादकत्व में 'संस्कृतरग' पत्र का प्रकाशन १९५८ ई. से हुआ। सन् १९५९ ई. में लखनऊ विश्वविद्यालय की ज्ञानवर्धिनी सभा से डॉ. सत्यव्रत सिंह के सम्पादकत्व में 'ज्ञानवर्धिनी' संस्कृत पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसमें छात्रों की कविताओं के साथ-साथ उच्च श्रेणी के निबंध भी प्रकाशित किये जाते थे। सन् १९५९ ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय संस्कृत महाविद्यालय की मुख पत्रिका

२३. मित्रगोष्ठी, ३/१०

के रूप में हस्तलिति 'सुरभारती' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। धनाभाव के कारण यह हस्तलिखति ही प्रकाशित होती थी। इसके सम्पादक विश्वनाथ शास्त्री जी थे। इस वार्षिक पत्रिका में प्राचीन भारतीय विद्याओं के संबंध में लघु निबंध मिलते हैं। सन् १९६१ में मध्यप्रदेश के रायपुर जिले से 'मेधा' नामक संस्कृतपत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। राजकीय विद्यालय से दूधाधारी संस्कृतपत्रिका प्रकाशित हुई। इसके सम्पादकत्व का भार प्राचार्य पर रहता था। विद्यालय के अध्यापकों के निबंधों का प्रकाशन विशेष रूप से किया जाता है। सन् १९६२ में एक और सुरभारती संस्कृतपत्रिका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। यह पत्रिका बढ़ोदरा संस्कृत महाविद्यालय (बड़ौदा) की मुख्य पत्रिका थी। यहीं से इसका प्रकाशन भी हुआ। उसी प्रकार अनेक वार्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन होता रहा है। आरण्यकम् संस्कृत शोध पत्रिका का प्रकाशन संस्कृत प्रसार परिषद् आरा से सन् १९८७ से आरम्भ हुआ। तब से इसके प्रकाशन कार्य अवधि गति से चल रहा है। इसमें व्याकरण, दर्शन साहित्य एवं वेद आदि से संबंधित विषयों के शोध-निबंधों का प्रकाशन होता है। इसके सम्पादक डॉ. गोपबन्धु मिश्र जी हैं। जो इस समय संस्कृत विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में आचार्य एवं अध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी में अनेक संस्कृत पत्रिकाओं के प्रकाशन से संस्कृत प्रज्ञा आलोक का सहज दर्शन हो सका।

इक्कीसवीं शताब्दी में भी संस्कृत पत्रकारिता का विशिष्ट स्थान है। इसके विविध प्रकाशनो से संस्कृत साहित्य समृद्ध हुआ है। सन् २००२ में संस्कृत मंजरी मासिकी पत्रिका का प्रकाशन दिल्ली संस्कृत अकादमी से हुआ। इसका सम्पादकत्व सचिव के अधीन रहा करता है। इसमें संस्कृत भाषा के श्रेष्ठ निबंधों का प्रकाशन होता है। इस पत्रिका में साहित्य, व्याकरण, दर्शन, वेद, आदि विषय से संबंधित निबंधों का प्रकाशन किया जाता है। संस्कृतविद्या नामक संस्कृत धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से संस्कृत की शोध पत्रिका का प्रकाशन २००२ से हो रहा है। यह वार्षिक पत्रिका है। संकाय प्रमु के सम्पादकत्व में इसका प्रकाशन होता है। इसका प्रारम्भिक नाम 'प्राच्यविद्या' था। जगद्गुरु समानन्दचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से 'वयम्' नामक संस्कृत शोध पत्रिका प्रकाशन २००६ से हो रहा है।

संस्कृत शोध की अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका प्राच्यविद्यानुसंधानम् का प्रकाशन जागृति बिहार, मेरठ, उत्तरप्रदेश से २००५ ई. में हुआ। इसके सम्पादक डॉ. वेदपपाल जी है। डॉ. वेदयाल जी जनता वैदिक कॉलेज बड़ौदा बागपत में संस्कृत विषय के एसोसिएट प्रोफेसर हैं। यह पत्रिका हिन्दी और संस्कृत दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती है। इसमें साहित्य, दर्शन, वेद, व्याकरण, भाषा-विज्ञान आदि विषयों के उत्कृष्ट निबंधों का प्रकाशन होता है। वर्ष में दो अंक का प्रकाशन होता है। संस्कृत भाषा में प्रकाशित होने वाली 'वाकोवाक्यम्' अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संस्कृत शोध पत्रिका है। आजकल काशी से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में इस पत्रिका का गौरवमय स्थान है। सन् 2008 से यह पत्रिका नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। अब तक पाँच अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस पत्रिका का सम्पादक डॉ. विवेक पाण्डेय जी है। वाकोवाक्यम् शोध संस्थान वाराणसी से वर्ष में दो बार (अप्रैल-सितम्बर, अक्टूबर-मार्च) प्रकाशित होती है। इसमें संस्कृत के अच्छे विद्वानों के शोध निबंधों का प्रकाशन होता है। साहित्य, दर्शन, वेद, व्याकरण के रहस्यमय विषय को प्रकाशित करना इस पत्रिका का मूलोद्देश्य है।

वर्ष २००८ में श्री पट्टाभिराम शास्त्री वेद मीमांसा एवं अनुसंधान केन्द्र हनुमदघट्ट वाराणसी से वार्षिक

पत्रिका 'अनुसंधानवल्लरी' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसमें संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं के निबंधों का प्रकाशन किया जाता है। साहित्य, व्याकरण, वेद, दर्शन के महनीय विषयों का प्रकाशन होता है। इसके संरक्षक प्रो. श्री किशोर मिश्र है, जो वेद विषय के प्रखर विद्वान माने जाते हैं। उसकी सम्पादिका प्रो. मनुलता शर्मा है। २०११ में सुरीचि कला प्रकाशन वाराणसी से पत्रिका 'सुसंस्कृतम्' पत्रिका का सम्पादन डॉ. हरिप्रसाद अधिकारी जी ने प्रारम्भ किया है। यह भी पत्रिका शोध के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रती है। इसमें संस्कृत विषयाधारित हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में उच्च कोटि के ही शोध निबंधों का प्रकाशन किया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्कृत पत्रकारिता का अविरल प्रवाह आज तक चला आ रहा है। नित-नूतन पत्रिकाओं का प्रकाशन कार्य अबाध गति से चल रहा है और इसमें उत्तरोत्तर विकास भी हो रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी से पहले संस्कृत भाषा की गति मन्द पड़ गई थी लेकिन इन पत्रिकाओं के प्रकाशन से इसमें गति आ गई है। संस्कृत पत्रिकारिता ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धित अधुनातन विद्या है जिसके द्वारा तथ्यों का ज्ञान सहजता से प्राप्त हो जाता है। ज्ञान और विज्ञान, दर्शन और साहित्य कला और कारीगरी, राजनीति और अर्थनीति, समाजशास्त्र और इतिहास,संघर्ष और क्रांति उत्थान और पतन, निर्माण और विनाश, प्रगति और दुर्गति के छोटे-बड़े प्रवाहों को प्रतिबिम्बित करने में पत्रकारिता के समान दूसरा सफल कौन हो सकता है। आधुनिक युग में अविकसित क्षेत्रों का उत्थान में पत्रकारिता का विशेष महत्व है। संस्कृत पत्रों से समाचारों केसाथ-साथ साहित्य विषयक ज्ञान भी सुलभता से हो जाता है। संस्कृत पत्रकारिता से संस्कृत भाषा को जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है। यदि व्यापक स्तर पर दैनिक रूप में संस्कृत पत्रकारिता को लाया जाय तो यह अतिशीघ्र जन-भाषा का पद प्राप्त कर लेगी। संस्कृत को जनभाषा बनाने में संस्कृत पत्रकारिता विशेष उपयोगी साबित हो सकती है।

भाषा का विकास व्यवहार से होता है। संस्कृत पत्रकारिता की सुलभता से संस्कृत का व्यवहार बढ़ेगा। जब व्यवहार बढ़ेगा तब संस्कृत भाषा समृद्ध होगी। उन्नीसवीं शताब्दी से संस्कृत पत्रकारिता के अविर्भाव से संस्कृत प्रेमियों की निरन्तर संख्या बढ़ रही है। संस्कृत मृतभाषा है इस भ्रांति को दूर करने के लिए कुछ पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन आरम्भ हुआ। कुछ पाश्चात्य संस्कृत विद्वानों की भी यही धारणा है। संस्कृत कथमपि मृतभाषा नहीं है, क्योंकि उसमें आज अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है।[२५]

संस्कृत पत्रकारिता से नित-नूतन ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसके पत्रिकाओं में प्रकाशित निबन्धों से विशाल ग्रंथों के निष्कर्षों का ज्ञान हो जाता है। जिस रहस्य को जानने के लिए सालों अध्ययन करना पड़ता है, उस रहस्य को निबंधों के माध्यम से अल्प समय में ही जाना जा सकता है। संस्कृत पत्रकारिता वर्तमान जीवन को ज्ञान देने वाली आधार स्वरूप -सभी लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति, व्यक्तित्व निर्माण और भविष्य निर्माण के रूप में पत्रकारिता का अत्यधिक महत्व है। वर्तमान मानव आज अपनी व्यस्तता के कारण चाहता है कि संसार का सूचनात्मक ज्ञान का लेखा-जोखा कम समय में ज्ञात हो जाय। रोजमर्रा के जीवन में अनेक विषयों का ज्ञान तो पत्रकारिता से होता है। साथ ही साहित्य, कला, दर्शन आदि से सम्बद्ध विषयों का ज्ञान भी हो जाता है। संस्कृत

---

२५. मिश्र रामगोपाल, संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास, पृ. १४०

पत्रकारिता से धर्म एवं संस्कृति के गुढ़ात्मक तत्वों का ज्ञान होता है। धर्म की भौतिकता और आध्यात्मिकता को समझाने के लिए दैहिक और परलौकिक उन्नति तथा अभ्युदय के लिए अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होना चाहिए। संस्कृति की पहचान संस्कृत ग्रंथों के आचरण से ही हो सकती है। अत: संस्कृति के लिए भी संस्कृत पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। धर्म एवं संस्कृति दोनों संस्कृत भाषा के प्रतिपाद्य विषय हैं।

आधुनिक और प्राचीन संस्कृत ग्रंथों को प्रकाशित करने के लिए अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होना चाहिए। संस्कृत पत्रिकाओं से साहित्य के विविध विषयों का ज्ञान होता है। अर्वाचीन और प्राचीन साहित्य नियमों के साथ-साथ व्याकरण सम्बन्धी तथ्यों के प्रकाशन से संस्कृत पत्रकारिता का और महत्व बढ़ जाता है। वेद भारतीय ज्ञान के कोश हैं। उनके रहस्यात्मक विषयों का प्रकाशन भी संस्कृत पत्रकारिता को विशेष उपयोगी बनाते हैं। अत: संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की महती आवश्यकता है।

संस्कृत पत्रिकाओं के प्रकाशन में अनेक प्रकार की समस्याओं का भी सामना सम्पादकों को करना पड़ता है। संस्कृत पत्रिकाओं के सम्पादन में सबसे प्रमुख समस्या अर्थ की समस्या है। संस्कृत पत्रिकाओं के मूल्य बहुत कम होते हैं और इसके पाठक भी कम ही होते हैं। फलस्वरूप संस्कृत पत्रिकाओं के सम्पादकों को अर्थ की समस्या को झेलना पड़ता है। पाठकों की कमी इसलिए है क्योंकि संस्कृत व्यावसायिक विषय नहीं है। यह अन्य भाषा के समान सभी लोगों के द्वारा नहीं जानी जाती है। इस प्रकार संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या संतोषप्रद नहीं मिलती। ग्राहक संख्या संतोषप्रद न होने के कारण उनका प्रकाशन भी समय पर अथवा सफलतापूर्वक नहीं हो पाता है।

अधिकांश संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन व्यक्तिगत आय-व्यय से हुआ। वे सम्पादक इतने धनाढ्य नहीं थे बिना किसी प्रकार के आर्थिक सहयोग से पत्रिका का सदैव प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका। किसी भी पत्र-पत्रिका के लिए लेखक की विशेष आवश्यकता होती है। लेखकों के सहयोग के बिना पत्रिका का सम्पादन सम्भव नहीं है। पत्र-पत्रिका में विविध सामग्रियों का प्रकाशन होता है। अत: श्रेष्ठ निबंधों की कमी की समस्या संस्कृत पत्रिका के संदर्भ में आती है।

पत्रों के प्रकाशन में विज्ञापन का विशेष महत्त्व होता है। अन्य भाषा के पत्र प्रकाशित विज्ञापनों से पर्याप्त मात्रा में अथ्र प्राप्त हो जाता है। लेकिन संस्कृत पत्रों के सम्पादक को उत्साहित करने वालों में लेखक और पाठक प्रधान स्थान रखते हैं। इस सभी का प्रोत्साहन सम्पादक के उत्साह के लिए अपेक्षित है। ग्राहकों, पाठको और लेखकों की तरफ से सम्पादक को प्रोत्साहन न मिलने के कारण उनका उत्साह मन्द पड़ जाता है, और धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आती जाती है कि पत्रों का सम्पादन बन्द हो जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के अनन्तर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान और संस्कृत अकादमी के आर्थिक सहयोग से अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन प्रारम्भ हुआ है जिससे शनै:-शनै: उसकी स्थिति में सुधार होने लगा है। लोग संस्कृत को पहले कर्मकाण्ड तक सीमित समझते थे लेकिन अब विद्यालयीय विषय के रूप में प्रत्येक निम्न कक्षा से उच्च कक्षा तक इसके पढ़ाई और रोजगार की सम्भावना तलाशी जा रही है। अब संस्कृत भाषा क्रमश: समृद्ध हो रही है। संस्कृत पत्रकारिता की सबसे प्रमुख समस्या भाषा की समस्या है। संस्कृत भाषा सब लोग व्यवहार करना प्रारम्भ कर देंगे तो संस्कृत पत्रिकाओं के लिए अर्थाभाव

कोई कारण नहीं रह जायेगा। अतः संस्कृत भाषा को जन-जन तक पहुँचाया जाय तभी संस्कृत पत्रकारिता का विकास सम्भव है।

इस प्रकार हम देते हैं कि उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारम्भ होने वाली संस्कृत-पत्रकारिता का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। इसके दैनिक मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, चतुर्मासिक षाण्मासिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, वार्षिक पत्रों के प्रकाशन से इसके विकास में संदेह नहीं है लेकिन इसके मार्ग में बाधाएँ भी हैं, भाषा की समस्या, अर्थ की समस्या, पाठकों की समस्या, लेखकों की समस्या। इन बाधाओं की झंझावातों को झेलते हुए संस्कृत पत्रकारिता नित नूतन समाचारों और ज्ञानों से हृदयाकाश को भरने में किसी से कम नहीं है। यह अल्प समय में जिस स्थिति में पहुँच गयी, उसके तीव्र गति के प्रकाशन का द्योतक है। भारतीय जीवन में प्राचीन विद्या का नया रूप पत्रकारिता ज्ञान निधि के रूप में प्रकट हुई है। इसके विकास के लिए हम संस्कृत सुधी जनों को सदैव प्रयासरत होना चाहिए।

-असिस्टेंट प्रो. संस्कृत विभाग
डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (म.प्र.)